Notification No. 560/2024

Date: 14.06.2024

Student Name: Alisha Anand

Supervisor Name: Professor Farhat Nasreen

Name of the Department: History and Culture

Name of the Topic: *Study of 16-18 Century India: Through Foreign Travelers' Accounts and Colonial Official Records*

Key Words: विदेशी यात्री, तत्कालीन समाज, शासक वर्ग, हरम, महिलाओं की स्थिति, सांस्कृतिक व्यवस्था|

FINDINGS

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 16-18 वीं शताब्दी के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक इत्यादि पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है| यह शोध मुख्य रूप से विदेशी यात्रियों के व्यक्तिगत अध्ययन पर आधारित है। इस दौरान भारत आये विदेशी यात्रियों के दृष्टिकोण से समाज को देखने पर यह प्रतीत होता है कि समाज के उच्च एवं निम्न वर्गों के बीच रहन-सहन, खान-पान एवं पहनावा-पोशाक इत्यादि को लेकर पर्याप्त अन्तर था| उच्च वर्ग बड़े-बड़े आलीशान मकानों में रहते थे और अच्छे एवं सोने-चांदी से सजे हुए परिधान पहनते थे तथा तरह-तरह के पकवान खाते थे| निम्न वर्ग के लोग घास-फूस से बने मकानों में रहते थे और साधारण वस्त्र या लंगोट पहनते थे या ज्यादातर नंगे रहते थे| सर्वसाधारण लोग खिचड़ी या एक तरह के भोजन पर ही अपना जीवन व्यतीत करते थे| उस समय भारतीय समाज में अंधविश्वास एवं उससे जुड़ी कुरीतियाँ जैसे बाल-विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा इत्यादि जैसी अन्य कुरीतियाँ प्रचलित थी जिसने लगभग सभी विदेशी यात्रियों का ध्यान आकर्षित किया है| लगभग हर वर्ग की महिलाओं की स्थिति दयनीय थी| तत्कालीन भारतीय उत्पादन, उद्योग- धंधे, आयात-निर्यात, वाणिज्य एवं

व्यापार, विदेशी व्यापार इत्यादि का विस्तृत विवरण विदेशी यात्रियों द्वारा दिया गया है। समाज आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर उच्च एवं निम्न वर्गों में बँटा हुआ था जो विदेशी यात्रियों के वृत्तान्तों में बहुत ज्यादा स्पष्ट रूप से नजर आता है| वृत्तान्तों में हमें मुग़ल शासको के व्यक्तित्व के बारे में बड़ी ही रोचक झलक देखने को मिलती है| यात्री अपने यात्रा वृत्तान्त को रोचक और निष्पक्ष तरीके से लिखने का प्रयास करते है| इस विवरण का महत्व इस कारण और भी बढ़ जाता है कि तत्कालीन फारसी इतिहास लेखन में सामान्य लोगों की दशा पर कोई विशेष विवरण नहीं दिया गया है जो कि विदेशी यात्रियों के विवरण में भरपूर मात्रा में देखने को मिलता है जबकि दरबारी इतिहास लेखन केवल राजाओं की महानता एवं कार्य-कलाप इत्यादि के ईद -गिर्द ही केंद्रित होता था। परन्तु विदेशी यात्रियों के वृत्तान्तों का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ यात्रियों ने भारतीय सामाजिक प्रथाओं का आलोचनात्मक वर्णन भी किया है और काफी हद तक सुनी-सुनाई बातों के आधार पर जानकारी प्रदान किया है| उन्होंने अपने सामाजिक मानदंडो के आधार पर भारतीय समाज को देखा है और अपने इसी दृष्टिकोण के कारण वह गलत धारणा बना बैठे| इस सन्दर्भ में विभिन्न विदेशी यात्रियों की यूरोपीय केन्द्रित मानसिकता को जानना भी महत्वपूर्ण है क्योकि यह यात्री हमारी परंपराओं एवं रीति-रिवाजों में रचे-बसे नहीं थे एवं दूसरे पृष्ठभूमि से आए थे| अतः उनके वृत्तान्तों का सावधानी से समीक्षा करना आवश्यक है।